गरतांग गली

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड में गरतांग गली का **उपयोग भारत और तिब्बत के बीच रेशम मार्ग व्यापार मार्ग के रूप में किया जाता था।**

मुख्य बिंदु:

- यह उत्तराखंड के **उत्तरकाशी ज़िले में नेलांग घाटी में** स्थित है। यह एक अद्वितीय पर्यटक आकर्षण के रूप में भी खड़ा है।
- उत्तराखंड के सुदूर कोने में स्थित, गारतांग गली **हलचल भरे पर्यटन सर्किट से दूर एक एकांत स्थान प्रदान करती है।**
    - यह अनोखा स्थान **प्रकृति के बीच प्रामाणिक अनुभव** और शांति चाहने वाले यात्रियों को आकर्षित करता है।
    - गाँव में भोटिया जनजाति का निवास है, जो एक स्वदेशी समुदाय है जो अपनी लचीलापन, पारंपरिक जीवन शैली और सांस्कृतिक विरासत के लिये जाना जाता है।
- गारतांग गली ऐतिहासिक रूप से **भारतीय उपमहाद्वीप को तिब्बत और मध्य एशिया से जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण व्यापार मार्ग था।**
- व्यापारी इस पहाड़ी दर्रे से होकर गुज़रते थे, **जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं, विचारों और सांस्कृतिक प्रभावों के आदान-प्रदान में सुविधा** होती थी।
- गरतांग गली चट्टान-किनारे लटकती सीढ़ी, जिसे **गरतांग गली पुल** के नाम से भी जाना जाता है, नेलांग नदी घाटी में 11,000 फीट की ऊँचाई पर एक ऊर्ध्वाधर रिज के साथ 500 मीटर तक फैला है।
    - इसका निर्माण **पारंपरिक देशी शैली में शुरू में पेशावर के पठान व्यापारियों** द्वारा किया गया था, जो तिब्बत और भारत के बीच सिल्क रोड व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता था।
    - **वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद,** भारतीय सेना द्वारा पहुँच प्रतिबंधित कर दी गई, जिससे पुल जर्जर हो गया।
    - वर्ष 2015 में भारत द्वारा इस क्षेत्र को पर्यटन के लिये फिर से खोलने के बाद, पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके लकड़ी की सीढ़ी को बहाल करने के प्रयास किये गए।
    - 59 वर्षों के बाद, पुल को **अगस्त 2021 में जनता के लिये फिर से खोल दिया गया।**

रेशम मार्ग

- यह प्राचीन वाणिज्यिक मार्गों का एक नेटवर्क था जो **पूर्व और पश्चिम को चीन से भूमध्य सागर तक जोड़ता था तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिये** एक प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करता था।
- हान युग **(207 ईसा पूर्व - 220 सीई)** की शुरुआत में पूरे देश में चीनी रेशम के बढ़ते व्यापार ने "सिल्क रोड" शब्द को जन्म दिया। 114 ईसा पूर्व के आसपास, हान राजवंश ने मध्य एशिया के माध्यम से व्यापार मार्गों का विस्तार किया, मुख्य रूप से एक **चीनी शाही दूत झांग कियान** की यात्रा और मिशन के परिणामस्वरूप।
- सिल्क रोड के साथ व्यापार के परिणामस्वरूप, **चीन, भारतीय उपमहाद्वीप, फारस, यूरोप, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और अरब की सभ्यताओं के बीच लंबी दूरी के राजनीतिक तथा आर्थिक संबंध स्थापित हुए।**
- यद्यपि रेशम **निस्संदेह चीन से मुख्य निर्यात था**, रेशम मार्गों में कई अन्य वस्तुओं के साथ-साथ **समन्वित विचारों, कई प्रौद्योगिकी, धर्मों और रोगों का आदान-प्रदान भी हुआ**। सिल्क रोड का उपयोग सभ्यताओं द्वारा वाणिज्यिक व्यापार के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने के लिये किया जाता था।

भोटिया जनजाति

- भोटिया या **भोटिया चरवाहों की एक व्यावसायिक जाति है।**
- उत्तराखंड के भोटिया लोग **तीन सीमावर्ती ज़िलों-पिथौरागढ़, चमोली और उत्तरकाशी में सात मुख्य नदी घाटियों** में फैले हुए हैं।
- उत्तराखंड में **सात प्रमुख भोटिया समूह** हैं जोहारी, दरमिया, चौदांसी, ब्यांसी, मारछा (माना घाटी), तोलछा (नीती घाटी) और जाध।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/gartang-gali